



राजस्थान में पांडुलिपि प्राप्ति के महत्वपूर्ण स्थान मंदिर विशेष संदर्भ बधीचंद जी का दिगंबर जैन संप्रदाय मंदिर-जयपुर

महेंद्र कुमार पंचारिया¹

¹शोधार्थी, इतिहास, टांटिया विश्वविद्यालय।

सारांश

भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही पांडुलिपियों के लेखन और प्रति लेखन का कार्य चला आ रहा है। हमारे पास साधारण रूप में दसवीं शताब्दी से पहले की पांडुलिपियों उपलब्ध नहीं है परंतु इसके बाद के काल से प्राचीन पुस्तकालयों, और उन्हीं की परंपरा को आगे बढ़ते हुए धार्मिक स्थलों यथा मंदिर, शास्त्र भंडारो आदि स्थलों पर हस्तलिखित ग्रंथों को संरक्षित रखने की परंपरा चली आ रही है।

मुख्यशब्द: शिलालेख, ग्रंथालय, शास्त्र भंडार, पाण्डुलिपि भण्डार, बधीचंद जी का मंदिर, मोक्ष मार्ग प्रकाशक।

पांडुलिपि जिसे अंग्रेजी में मैनुस्क्रिप्ट कहते हैं, से तात्पर्य है हाथ की लिखावट, अर्थात् लेखक द्वारा हाथ से लिखा गया प्रमाणित लेख जो लगभग सौ वर्ष से ज्यादा प्राचीन हो। हालांकि मैनुस्क्रिप्ट का अर्थ हस्त लेखन से भी लगाया जाता है परंतु वहां पर संदर्भ शिलालेख, ताम्रपत्र का भी हो सकता है किंतु पांडुलिपि से जो बोध होता है वह मूल रूप से ग्रंथ लेखन अथवा प्रतिलिपि लेखन से ही लगाया जाना चाहिए।

राजस्थान के विशेष संदर्भ में अगर देखा जाए तो साहित्य निर्माण व संरक्षण के क्षेत्र में यहां के राजा महाराजाओं से लेकर महान मुनियों, विद्वानों जैसे कर्नल टॉड, डॉ रघुवीर, एल.पी. टेसीटोरी, राहुल सांकृत्यायन, बीकानेर के अगर चंद जी नाहटा जैसे अनेक विभूतियों का अविस्मरणीय योगदान रहा है। यहां के शासक न केवल स्वयं कला और साहित्य के पारखी थे बल्कि उन्होंने स्वयं भी महान साहित्य की रचना की है। साथ ही साथ अपने राज्य में विद्वानों एवं कवियों को संरक्षण भी दिया है। राजस्थान राज्य में विशेषकर जयपुर, अलवर, बीकानेर, नागौर, जैसलमेर के शासकों ने हस्तलिखित ग्रंथों के लिए

संग्रहालय और पोथीखानों का निर्माण करवाया जहां वर्तमान में अति महत्वपूर्ण साहित्य पांडुलिपियों के रूप में संरक्षित है।

ऊपरी स्तर पर देखने से लगता है कि ग्रंथों के संरक्षण का कार्य राज्य स्तर पर ही हुआ होगा। संभवतः अन्यत्र हुआ होगा लेकिन राजस्थान के संदर्भ में यहां के निवासियों, धनाढ्य सेठों विशेष रूप से जैन धर्म से जुड़े हुए यतियों और गृहस्थों ने प्रशंसनीय कार्य किया है। विद्वानों, मुनियों ने अपनी प्रखर बुद्धि से पांडुलिपियों की मूलप्रतियों का संकलन किया तो धनाढ्य सेठों ने मंदिरों में, धर्मशालाओं में इनके संरक्षित रखने का जिम्मा उठाया तथा विद्वानों और साधुओं से अनुरोध कर नवीन साहित्य का निर्माण करवाया और प्राचीन ग्रंथों का जीर्णोद्धार करवाया, उन्हें नष्ट होने से बचाया। जैन समाज के इस अद्भुतपूर्व साहित्य सेवा के फलस्वरूप हमारे गांव और नगरों में अनेक ग्रंथालय स्थापित किए गए तथा उनकी सुरक्षा एवं संरक्षण का कार्यभार भी उन्हें स्थान पर रहने वाले जैन श्रावकों और गृहस्थों को दिया गया।

उधर साहित्य प्रेमियों ने भी अपना जीवन साहित्य सेवा में अर्पित कर दिया। दिन-रात इसी कार्य में जुटे रहे। ऐसे विद्वानों के कारण ही विशाल साहित्य का निर्माण हो सका जो हमारे लिए आज अमूल्य निधि है। इसके अतिरिक्त कुछ धनाढ्य सेठ जो अधिक विद्वान नहीं थे प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपियां करके ही साहित्य सेवा का महान पुण्य उपार्जन करते थे। उन्होंने इन शास्त्र भंडारों में शास्त्रों का संग्रह केवल मात्र साहित्य सेवा के आधार पर किया था ना की स्वाध्याय करने वालों की अल्पसंख्या को देखकर।

वर्तमान में राजस्थान में लगभग तीन सौ से ज्यादा शास्त्र भंडार मिलते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि यह तीन सौ स्थान की संख्या है ना की शास्त्र भंडारों की, जैसे अकेले जयपुर में तीस से ज्यादा शास्त्र भंडार हैं। बीकानेर में भी काफी शास्त्र भंडार हैं। पाटन में बीस से ज्यादा संग्रहालय हैं। लगभग सभी शास्त्र भंडारों में पांडुलिपियों की संख्या भी अलग-अलग है। कहीं पचास तो कहीं पचास हजार। बीकानेर जोधपुर तथा जयपुर जैसे बड़े स्थलों पर तो एक लाख से ज्यादा पांडुलिपियों वाले शास्त्र भंडार भी हैं। शास्त्र भंडारों का महत्व भी उनमें उपलब्ध पांडुलिपियों के विषयों के आधार पर है। किसी शास्त्र भंडार में प्राचीन प्रतियों का विशेष संग्रह है तो दूसरे में भाषा विशेष जैसे संस्कृत, प्राकृत अथवा स्थानीय भाषा के ग्रंथ अधिक प्राप्त होते हैं। कहीं धार्मिक ग्रंथ हैं तो कहीं नाटक, ज्योतिष, धर्म, तत्व-चिंतन, व्याकरण, काव्य आदि लौकिक साहित्य की प्रधानता है।

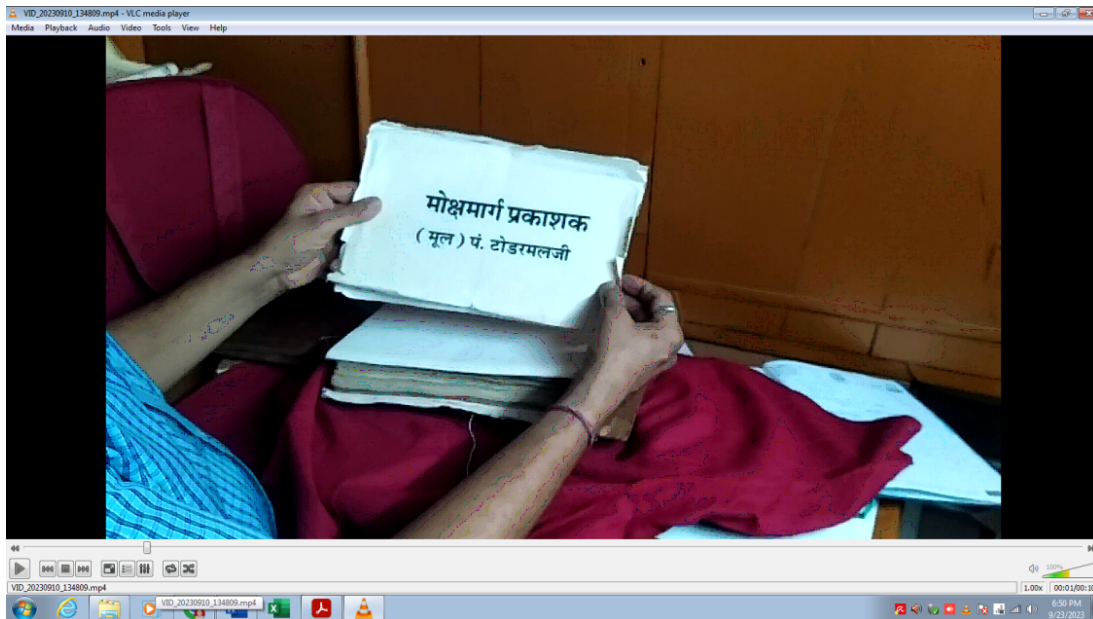
राजस्थान के प्रमुख दिगम्बर जैन पाण्डुलिपि भण्डार

जयपुर नगर के पांडुलिपियों के केंद्र अपनी संख्या, प्राचीनता, साहित्य की दृष्टि से अन्य राज्यों से बेहतर स्थिति में है। यहां प्रायः सभी मंदिर तथा चौत्यालयों में पांडुलिपियों का संग्रहण किया हुआ है। कुछ विशेष

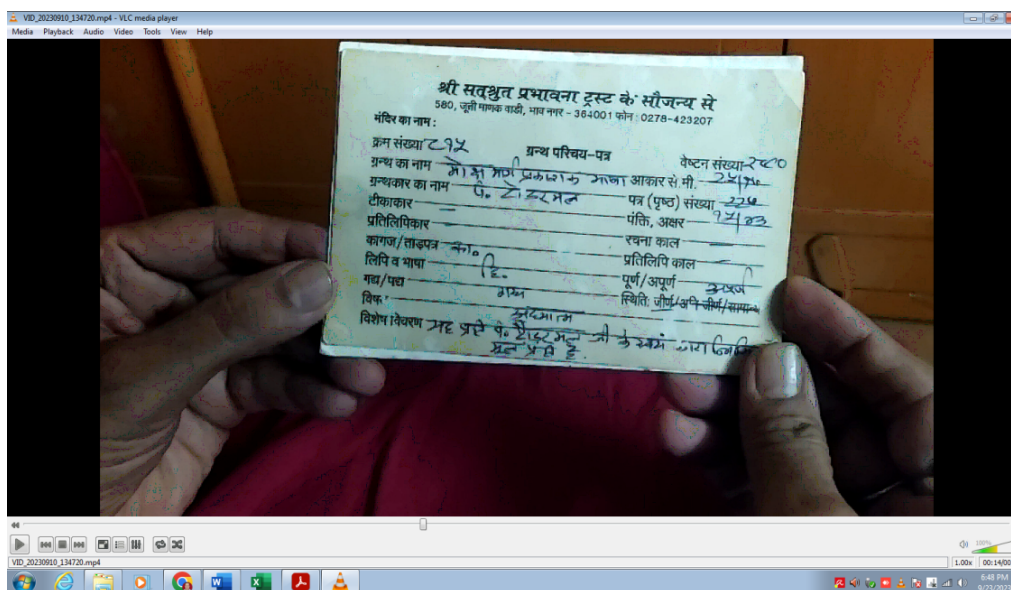
मंदिरों का उल्लेख किया जा रहा है जिनके शास्त्र भंडार न केवल संख्या और प्राचीनता में उत्कृष्ट हैं अपितु भाषा की दृष्टि से भी समृद्ध है, जैसे आमेर शास्त्र भंडार, तेरापंथी बड़े मंदिर का शास्त्र भंडार, बाबा दुलीचंद का शास्त्र भंडार, ठोलियो जी के मंदिर का शास्त्र भंडार, बधीचंद जी के मंदिर का शास्त्र भंडार, पांडे लूणकरण जी के मंदिर का शास्त्र भंडार, गोधों के मंदिर का शास्त्र भंडार, पार्श्वनाथ जी के मंदिर का शास्त्र भंडार, पटौदी जी के मंदिर का शास्त्र भंडार, लशकर के मंदिर का शास्त्र भंडार, छोटे दीवान जी एवं बड़े दीवान जी के मंदिर का शास्त्र भंडार, संघी जी के मंदिर का शास्त्र भंडार, छाबडों के मंदिर का शास्त्र भंडार, जोबनेर के मंदिर का शास्त्र भंडार, नया मंदिर का शास्त्र भंडार, लाल भवन का पांडुलिपि भंडार आदि। यह कुछ ऐसे शास्त्र भंडार हैं जिनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी, राजस्थानी भाषा के महत्वपूर्ण साहित्य का संग्रह है।

दिगंबर जैन संप्रदाय का बधीचंद जी का मंदिर-जयपुर

जयपुर में बधीचंद जी का मंदिर जौहरी बाजार में घी वालों के रास्ते में अवस्थित है। विशाल और कला पूर्ण बधीचंद जी का मंदिर जयपुर स्थापना के समय महाराजा सवाई सिंह जी के समकालीन दीवान बधीचंद जी के द्वारा बनवाया गया है। यह मंदिर महान पंडित श्री टोडरमल जी की कार्यस्थली रही है। ऐसा कहा जाता है की संवत् 1821 में जयपुर महाराजा माधव सिंह जी के दीवान रतन चंद्र जी के कहने पर टोडरमल जी जयपुर आए तथा इस क्षेत्र को उन्होंने अपनी कर्मस्थली बनाया। टोडरमल जी एक संपन्न परिवार से थे तथा स्वयं एक उच्च कोटि के विद्वान भी थे। उन्होंने अपने समय में भारत के भिन्न-भिन्न भागों से विभिन्न प्रकार के ग्रंथों का संकलन कर इस मंदिर में स्थापित किया। साहित्य के प्रति उनका अनुराग इतना गहरा था कि मंदिर परिसर में ही उनके मार्गदर्शन में ग्रंथों की प्रतिलिपियों का काम निरंतर होता रहता था। स्वयं उन्होंने यही बैठकर गोमटसार, आत्मानुशासन, जैसे महान ग्रंथ की हिंदी भाषा में तथा मोक्ष मार्ग प्रकाशक जैसे महत्वपूर्ण सैद्धांतिक ग्रंथ की रचना की जिसकी मूल प्रति आज भी इस मंदिर में संग्रहित है।



मोक्ष मार्ग प्रकाशक पांडुलिपि का वर्गीकरण



पंडित टोडरमल जी मूल ग्रंथों को जो संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं में होते थे उन्हें जयपुर के स्थानीय भाषा में लोगों को सुनाते तथा उनका भावार्थ समझाते थे।

दीवान बधीचंद जी का मंदिर गुमान पंथ का मंदिर भी कहा जाता है ऐसा इसलिए है की पंडित टोडरमल जी के दो पुत्र थे। बड़े हरिश्चंद्र और छोटे पुत्र गुमानी राम जी। गुमानीराम जी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे और धार्मिक कट्टरता में अपने पिता से भी दो कदम आगे थे। वे तत्कालीन धर्म में प्रचलित शिथिलाचार्य के कट्टर विरोधी थे। इसलिए उन्होंने अपने नाम से एक आचार संहिता बनाई जिसे गुमान पंथ आमनाएं कहा जाता है। ऐसा कहा जाता है कि संवत् 1837 में पंडित गुमानमल जी ने गुमान पंथ की स्थापना की तथा जो

नियमावली बनवाई उसके नियम अत्यंत कठोर थे इसका प्रमुख उद्देश्य धर्म के प्राकृतिक रूप को बनाए रखना था।

पंचायती मंदिर होने तथा महान विद्वानों की साहित्यिक गतिविधियों के केंद्र होने के कारण यहां के शास्त्र भंडार अधिक महत्वपूर्ण है। यहां संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी, राजस्थानी एवं ढूंढारी भाषाओं के ग्रंथों का उत्तम संग्रह मिलता है। इन हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या 1250 से ज्यादा है जिसमें 162 गुटके तथा शेष ग्रंथ है। पांडुलिपियों के विषय अलग-अलग हैं। जिनमें विशेष रूप से सिद्धांत, धर्म एवं आचार्य शास्त्र, अध्यात्म, पूजा, स्रोत आदि विषयों के साथ-साथ काव्य, चरित्र-पुराण, कथा, नीति शास्त्र आदि विषयों का भी उत्तम संग्रह है। भंडार में 15वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी की प्रतियों का अच्छा संग्रह है। हेमराज कृत प्रवचन सार भाषा एवं गोमटसार कर्मकांड भाषा, बनारसी दास का समयसार नाटक, शुभ चंद्र का चरित्रशुद्धि विधान, पंडित लाखु का जीनदत्त चरित्र, पंडित टोडरमल द्वारा रचित गोमटसार भाषा आदि ग्रंथों की महत्वपूर्ण प्रतियां यहां उपलब्ध है। भंडार की सबसे प्राचीन प्रती वद्धमाणकाव्य प्रति है जो संवत 1481 की लिखी हुई है। यह प्रति अपूर्ण है तथा सबसे नवीन प्रति संवत 1987 की अढ़ाई द्वीप पूजा की है।

मोक्षमार्ग प्रकाशक पांडुलिपि प्रथम पेज



भगवान श्री आदिनाथ जी

यह मंदिर दिगंबर जैन मंदिरों के पंचायती मंदिरों में से एक प्रमुख मंदिर है। मंदिर में मूल प्रतिमा मूल नायक भगवान श्री आदिनाथ जी की है जो की एक काले संगमरमर की मूर्ति से निर्मित है।

मंदिर के मुख्य गर्भ ग्रह में विराजित भगवान आदिनाथ जी की मूर्ति के ऊपर बनाई गई छतरी में सोने की नक्काशी की गई है जो की लाइटिंग के बाद बेहद प्रभावशाली नजर आती है। जैसा कि ऊपर चर्चा की गई यह मंदिर गुमानपथ आमनाओं को स्वीकार करता है अतः यहां मूर्ति का अभिषेक करने के भी कुछ नियम हैं यह मूर्ति का अभिषेक दूध घी या अन्य किसी भी पदार्थ से यहां तक की सामान्य पानी से भी उसका अभिषेक नहीं होता कोई भी चलता-फिरता व्यक्ति भी यहां अभिषेक नहीं कर सकता है। मूर्ति का अभिषेक पूर्ण रूप से शुद्ध वस्त्र धारण करने के पश्चात में शुद्ध जल से ही किया जाता है।



चतुर्विंशति जिनालय (एक ही शिला पर चौबीसों तीर्थकरों की मूर्तियाँ)



जिस पर अंकित है-सम्वत् १८६१ बैसाख सुदी ५ सोमस. जयपुरे स-रामचंद्र छाबड़ा गोत्रे प्राणप्रतिष्ठा का.

सन्दर्भ सूची

पांडुलिपि विज्ञान, डॉ सत्येंद्र, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।

राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन की 2010-11 की रिपोर्ट, दिल्ली।

राजस्थान के पांडुलिपि भंडार, जयपुर।

जैन ग्रंथ भंडार इन राजस्थान, डॉक्टर कस्तूर चंद्र कासलीवाल।

राजस्थान जैन ग्रंथ भंडार के भाग, भाग तीन, डॉक्टर कस्तूरचंद्र कासलीवाल एवं अनूपचंद्र न्यायातीर्थ।

दिगंबर जैन मंदिर महासंघ, जयपुर की सूचियां https://www.youtube.com/watch?v=34l_3Qv_RB0S50.

संदर्भ सूचियां के अतिरिक्त विवरण व्यक्तिगत स्तर पर एकत्र किए गए हैं जिनमें मंदिर ट्रस्ट के सचिव श्री राज प्रमोद शाह का विशेष योगदान रहा जिन्होंने हमें अपने व्यस्त दिनचर्या के बावजूद आचार्य पंडित श्री टोडलमल जी के द्वारा रचित मोक्षमार्ग प्रकाशक पांडुलिपिका अवलोकन करवाया तथा अकृत्रिम चौत्यालय की जानकारी प्रदान की एवं दर्शन उपलब्ध करवाए। इसी के साथ डॉ प्रीति जैन अपभ्रंशी साहित्य अकादमी जयपुर और डॉ. संजीव गोधा जयपुर से भी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से उचित मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।